किताब है - नीरोग होने का अद्भुत उपाय,

अध्याय है - ६,

बिसय है - ईश्वर और रोग

सौ में निन्यानब्बे के विचार से संसार को ईश्वर ने उत्पन्न किया है और ईश्वर परम पवित्र, निरामय, नीरोग, निर्विकार, निर्लेप और निरंजन है । क्या जो निर्विकार है, उसी से विकार की सृष्टि हो सकती है ? क्या जो निरामय और नीरोग है; वही रोगों को उत्पन्न करेगा ? क्या जो निष्पाप है, वही पापों को बना सकता है ? क्या जो आनंदस्वरूप, आनंदकंद और सच्चिदानन्द है वही दु:ख, क्लेश और विपत्ति की सृष्टि कर सकता है ? कभि नहीं । परमानन्द, सच्चिदानन्द, परमात्मा जो निरामय, निर्विकार और निष्कलंक है वह कभी पाप, दोष, रोग और दु:ख नहीं बना सकता । रोग : उत्पन्न ही नहीं हुये । रोगों की सृष्टि ही नहीं हुई, रोगों को ईश्वर ने बनाया ही नहीं । रोगों को यदि इश्वर ने नहीं बनाया तो बिना उसकी आज्ञा के कौन-सी ऐसी दूसरी शक्ति या पुरुष है, जिसने रोगों को बना कर ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि में रख गया ? हाँ उस जगह पर, जहाँ ईश्वर न रहा हो, कोई उसका शत्रु सम्भव है, रोगों को बना कर रख गया हो ! पर क्या संसार में कोई ऐसी जगह है, जहाँ वह सच्चिदानन्द, निर्विकार ईश्वर नहीं है ? क्या किसी प्रभावशाली बलवान, प्रतापी, प्रजाप्रिय और दयावान सम्राट् के सामने उसकी प्रजा को एक डाकू लूट सकता है ? यदि एक सम्राट् के सामने चोर डाकू उसकी प्रजा को दु:ख नहीं दे सकते; तो दीनबन्धु, कृपासिन्धु दयासागर: और सर्वशक्तिमान भगवान

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

के होते हुए और देखते हुए उनकी सृष्टि के भीतर उन्हीं के पुत्रों के पास दूसरा कौन ऐसा हो सकता हैं, जो रोगों को बना कर यहाँ इस संसार में छोड़ जाता। एक कर्तव्य परायण मामुलि पुलिस के सामने उसकी शक्ति भर दुखदायी घटना घटने नहीं पाती तो परमदयालु, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् ईश्वर के सामने दु:खदायिनी घटनायें कैसे घट सकती हैं ? अत: रोग वास्तव में नहीं बने। इनकी सृष्टि ही नहीं हुई। ईश्वर ने रोगों और दु:ख को बनाया ही नहीं। रोगों की कल्पना करने वाले और कल्पना से ही रोगों को बना कर लोगों के हृदय में रखने वाले वैद्य, हकीम और डाक्टर हैं अथवा हम स्वयम् अपने अशुभ व्यर्थ और असत्य विचारों; कल्पना और भावनाओं से रोगों का बना लेते हैं।

वास्तव में यह सृष्टि हमारी ही बनाई हुई है । वेद में कहा है कि -

"तत्सृष्टवा तदेवानुप्राविशत्" ।

अर्थात्, उसने उसे बनाकर उसमें स्वयम् प्रवेश किया। आत्मा ने स्वयम् इसे बनाया और अपने बनाये हुए घर में स्वयम् रहता है। अतः जितनी चीजें हमने बनाई हैं, सब अपने आराम और सुख के लिए। सब हमारे सुख के लिए है, सब हमारी भलाई के लिए हैं। संसार की तमाम घटनाएं हमारी उन्नति और सुख के लिए हैं; पर मनुष्य अज्ञानवश स्वयम् अपने बनाये हुये देवता को देखकर राक्षस समझता और डर कर गड्ढे में गिर पड़ता है ! अज्ञानवश अपनी छाया को मनुष्य भूत समझ कर मर जाता है।

मिठाई खाते-खाते जब मनुष्य ऊब जाता है, तो स्वयम् थोड़ी-सी खटाई और तिताई खा लेता है । तिताई, नमक और खटाई खा लेने से

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

फिर जिह्वा मधुरता का स्वाद ले सकती है। तिताई कोई खराब चीज नहीं है। बहुमूल्य हीरे का भी यदि यथावत् उपयोग न हो तो वह मृत्यु और रोग का कारण हो सकता है। अपनी जगह पर संखिया, अफ्यून, धतूरा; कुचला और शराब भी बडे उपयोगी पदार्थ है । संसार में कोई खराब वस्तु नहीं है। मनुष्य अपनी ही कल्पना और विचारों से दुखी और रोगी होता है। नहीं तो सच्ची बात यह है कि संसार में रोग नाम की कोई वस्तु अभी तक उत्पन्न ही नहीं हुई।

आप ही का प्रबन्ध है । आप ही का नियत किया हुआ नियम है । आप ही के सेवक आप ही के आज्ञानुसार जब शरीर रूपी घर की सफाई और मरम्मत के लिए कुछ चीजों को निकाल कर बाहर कर देते और दीवार के कुछ भागों को खुरच डालते और कूड़े करकट को निकाल कर बाहर फेंकने लगते हैं तो आप डर जाते हैं और नौकरों को निकाल बाहर करते । इसका फल यह होता है कि अलग की हुई चीज अपनी-अपनी जगह पर नहीं पहुंच पाती, कूड़े पड़े रह जाते हैं और खुरचे हुये, गिराये हुये तथा खोदे हुये स्थान जैसे-तैसे रह जाते हैं, जिससे बहुत बड़ी हानि होती है और अन्त में ऐसा मकान गिर पड़ता है।

ठीक यही दशा शरीर की भी है। इस शरीर के भीतर भी सफाई, मरम्मत और कूड़ा-करकट निकाल कर बाहर फेंकने के लिए हजारों सेवक मौजूद हैं । कुछ काम नित्य होता है और कुछ मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक रूप में होता है और कुछ आवश्यकता पड़ने पर होता है। पर होता है, बड़ी मुस्तैदी के साथ । इस शरीर के छोटे-छोटे सेवक तो लाखों नहीं अरबों हैं। जहाँ आवश्यकता हुई, इनकी सेना वहाँ पहुंच जाती है। मरम्मत के समय यह भी कहीं खुरच देते हैं, कहीं खोदते हैं, कहीं काटते और गिरा देते हैं। बस, मनुष्य डर जाता है; लगता है दवा

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

करने । दवा इन सफाई करने वाले नौकरों की सहायता नहीं करती, किन्तु उनके कार्यों में अड़चन डालती है । कितने नौकरों को औषधियाँ निकाल देती हैं और भी मार डालती हैं। इसका फल यह होता है कि मनुष्य सचमुच रोगी हो जाता है और कभी-कभी इस अड़चन से मर भी जाता है। इन सब बातों पर विचार करने से मालूम होगा कि रोगों की सृष्टि अज्ञानवश कल्पना के भीतर हुई है, वास्तव में रोग उत्पन्न ही नहीं। संसार में रोग नाम की कोई वस्तु कहीं नहीं है। जो वस्तु वास्तव में नहीं है, उसी से डर कर, उसी की भावना करके मनुष्य दुखी हो रहा है।

रोगों से डरना छोड़ दो । जिससे मनुष्य डरता है, वह वस्तु दिमाग के भीतर जड़ जमा लेती है। दिमाग के भीतर आ जाने से मनुष्य उसी का बार-बार ध्यान करता है और जिसका मनुष्य ध्यान करता है, वही वह हो जाता है । अत: रोग को दिमाग और मन से निकाल डालो। इस भूत से डरना छोड़ दो। रोग को ईश्वर नहीं बना सकता। अतः वह कहीं नहीं है; वह बना ही नहीं । रोग तुम्हारा कुछ नहीं कर सकता। रोग से डरना छोड़ दो। तुम रोगी नहीं हो । सच्ची बात यह है कि तुम वास्तव में निराकार, निर्विकार, निरामय और सच्चिदानन्द ईश्वर हो।

--समाप्त--

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.